every endeavour but the response from Pakistan is not good.

Shri Hem Barua: In pursuance of the Tashkent Agreement a conference of the Commerce Ministers of India and Pakistan was held in Rawalpindi Is it not a fact that in that conference a decision was taken to release the goods and to lift the ban on trade, if so, by failing to do it, has not Pakistan violated the Tashkent Agreement and the decision arrived at in that conference at Rawalpindi?

Shri Dinesh Singh It is true that Pakistan is not fulfilling its obligations under the Tashkent Agreement

Shri Hem Barua What is this reply? We know that Pakistan is not fulfilling its obligations What steps are they taking to bring Pakistan to a reasonable frame of mind in the light of the Tashkent Agreement?

Shri Dinesh Singh As the House knows, it is a Declaration and not an agreement and it is a much bigger question

Shri Bal Raj Madhok Is it a fact that after the Tashkent Declaration Pakistan has stopped payment of those bargains which had taken place earlier, say for example the sale of Dalmia Cement Mills and other things and that they have stopped every payment due to India in the form of remittances, bonuses, etc and, if so, may I know whether any reciprocal action has been taken by India to stop all payments of shares and other things due to Pakistan?

Shri Dinesh Singh. So far as payments agreement is concerned, I shall have to enquire from my colleague in the Finance Ministry as to what the exact position is about our side So far as I remember, Pakistan has not been fulfilling its obligations and I am sure that this point must have been borne in mind

Shri Bal Raj Madhok: Sir, here is a question which is very much related to this. When the hon. Minister comes here, he should know what type of questions can be asked and he should come prepared for them. The Finance Minister is not here Who are we to know about it? This is a relevant question connected with the question that has been asked

Shri Indrajit Gupta: The reports have appeared that there are a number of Pakistani commodities which are being re-exported through third countries, say, for example, raw jute, to India and in some cases *vice versa* also May I know whether the Government has any information on this subject

Shri Dinesh Singh: We import some items from different countries I cannot say what the origin of these items is Perhaps some country may have imported from Pakistan and given to us The hon Member knows very much that this is being practised by a number of countries what is called, the Swiss trade

पुस्तकों का आयात

\+

*996 **श्री प्रकाशवीर शास्त्री :**
श्री रघुवीर सिंह शास्त्री :

क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत में साहित्य की बहुत सी पुस्तकों का आयात किया जा रहा है,

(ख) क्या यह भी सच है कि विज्ञान और अन्य उपयोगी विषयों की पुस्तकों के साथ-साथ बहुत सी यौन सम्बन्धी पुस्तकों का भी आयात किया जा रहा है,

(ग) ऐसी पुस्तकों पर प्रतिवर्ष कितनी विदेशी मुद्रा खर्च की जाती है, और

(घ) क्या सरकार ऐसी पुस्तकों के आयात पर रोक लगाने का विचार कर रही है?

वाणिज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : (क) से (घ). एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है।

विवरण

वर्तमान आयात नीति के अन्तर्गत पुस्तकों के सुस्थापित आयातकों को उनके सर्वोत्तम वर्ष के आयात के 150 प्रतिशत तक का कोटा दिया जाता है । साहित्यिक और वैज्ञानिक पुस्तकों के लिए अलग अलग कोटे नहीं हैं, परन्तु पत्र-पत्रिकाओं तथा कथा साहित्य के लिए कोटा लाइसेंसों के केवल 40 प्रतिशत भाग का प्रयोग करने की अनुमति है एवं इसके अतिरिक्त यह भी शर्त है कि कथा साहित्य की पुस्तकों के आयात के लिए कुल कोटे के केवल 10 प्रतिशत भाग का ही प्रयोग किया जाए।

2. तकनीकी पुस्तकों, विधि सम्बन्धी सन्दर्भ पुस्तकों अथवा चिकित्सा व्यवसाय, वैज्ञानिक गवेषणा, औद्योगिक प्रक्रिया सम्बन्धी पुस्तकों के आयात के लिये अनुपूरक लाइसेंस देने की व्यवस्था है।

3. 1964-65, 1965-66 और 1966-67 (अप्रैल-फरवरी) में आयात की गई पुस्तकों का कुल मूल्य क्रमशः 3.29 करोड़ रु०, 2.76 करोड़ रु० तथा 3.10 करोड़ रुपया था। इस अवधि में केवल 11 लाख रुपया, 7 लाख रु० और 16 लाख रु० मूल्य की पत्र-पत्रिकाओं का आयात हुआ था।

4. अश्लील तथा अवांछनीय पुस्तकों के आयात पर रोक लगी हुई है और सीमा शुल्क अधिकारी के लिये इसे कार्यान्वित करना अपेक्षित है। पुस्तकों के आयात के लिये तमाम लाइसेंस इस शर्त पर दिये जाते हैं कि वे अवांछनीय प्रकार की पुस्तकों, विनोद पत्रिकाओं तथा साहित्य एवं पत्रिकाओं के लिये वैध नहीं होंगे। अश्लील तथा अवांछनीय प्रकार की अनेक पत्रिकाओं पर रोक लगा दी गई है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : : अध्यक्ष महोदय, विवरण में पिछले तीन वर्षों के जो आंकड़े दिये गये हैं उन से लगता है कि पिछले 20 वर्षों में लगभग सवा तीन करोड़ रुपये प्रति वर्ष के हिसाब से इस प्रकार की पुस्तकों का आयात हुआ, जो सब मिला कर 75 करोड़ रुपये की बताई जाती है । अंग्रेजी राज्य के समय में भी इतनी बड़ी मात्रा में विदेशी पुस्तकों का आयात नहीं होता था, विशेष रूप से कथा रें साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं का जब कि अब भारत सरकार के सामने इतनी विदेशी मुद्रा की कमी है तो क्या किसी प्रकार से इस आयात को कम किया जा सकता है। क्या इस नीति पर विचार किया गया है या सरकार ज्यों का त्यों इस नीति को जारी रखना चाहती है ?

श्री दिनेश सिंह : माननीय सदस्य जानते हैं कि जब से अंग्रेजी सरकार यहां से गई है तब से इस देश में पढ़ाई बहुत ज्यादा बढ़ी है, यहां पर अब बहुत ज्यादा लोग पढ़ते हैं इसलिये किताबों को बाहर से मंगाने की जरूरत पड़ती है । बहुत दफ़ा इस सदन में भी कहा गया है कि किताबों मगाना खुला छोड़ देना चाहिये, ताकि ज्यादा से ज्यादा किताब हमारे यहां आयें। यह बात सही है कि हमको देखना चाहिये कि गलत तरह की किताबों पर विदेशी मुद्रा न बरबाद की जाये, उस के लिये हम निरन्तर कोशिश करते रहते हैं ।

Shri N. K. Somani: What is wrong with sex books?

Shri Hem Barua: Whether sex books are good or bad who is going to judge?

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : इस प्रश्न के भाग (ख) के उत्तर में मंत्री महोदय ने कहा है कि जो इस प्रकार की अश्लील पुस्तकें हैं, विशेषकर जो नई पीढ़ी के युवकों के लिये हानिकारक हैं, उनके आयात पर भारत

सरकार ने कानूनी प्रतिबन्ध लगा रखा है, लेकिन दिल्ली के चौराहों पर जहां कि यह विदेशी साहित्य बिकता है वहां प्रायः कर के इस प्रकार की पुस्तकों और इस प्रकार के दूसरे साहित्य की पूरी तरह से भरमार इन दुकानों में देखी जा सकती है । क्या सरकार ने इस बात की जानकारी प्राप्त की है कि कहीं उन पुस्तकों की आड़ में इस प्रकार की अश्लील पुस्तकों का आयात तो प्रारम्भ नहीं हो रहा है जो देश की नई पीढ़ी को बिगाड़ने में सहायक हो रही हैं ? अगर सरकार ने इस प्रकार की जानकारी प्राप्त की है तो इस प्रकार की पुस्तकों का आयात करने वाले कुछ व्यक्तियों के खिलाफ क्या सरकार ने किसी प्रकार की कोई कार्यवाही की है ?

श्री दिनेश सिंह : मेरे ख्याल से कोई ऐसी जांच इसमें नहीं हुई है । लेकिन जैसा माननीय सदस्य ने कहा है कि दिल्ली में ऐसी किताबें बिकती हैं जो हमारी बैंड-लिस्ट में हैं, वे अगर बिकती हैं, तो मैं उसकी जांच करवाने की कोशिश करूंगा । मैंने खुद नहीं देखा है क्योंकि मैं उधर नहीं गया हूं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : हर चौराहे पर बिकती हैं ।

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री : पश्चिमी विचारधारा के प्रभाव के कारण आजकल इस सम्बन्ध में दृष्टिकोण बड़ी तेजी से बदल रहा है । मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि कौन चीज अश्लील है या नहीं है : इसके लिये उन्होंने क्या तरीका या मानदण्ड निर्धारित किया है ? साथ ही इसके लिये क्या उपाय या सतर्कता बरती जा रही है ताकि इस प्रकार का साहित्य कच्ची उम्र के शिशुओं के हाथ में न जाय और उन पर कुप्रभाव न पड़े ?

श्री दिनेश सिंह : यह एक ऐसा विषय है, जिस पर कोई एक मत नहीं हो सकता है । जब यह सवाल हो रहा था आप ही की बगल से कई आवाजें, अध्यक्ष महोदय, आपने सुनी होंगी जो इसके विपरीत थी, फिर भी जैसे माननीय सदस्य कह रहे हैं, हम तो इसकी कोशिश करते हैं । जिन अखबारों या किताबों में कोई भद्दे तरह की तस्वीरें छपती हैं या जो जाहिरा तौर पर ऐसी दिखती हैं जिनकी यहां जरूरत नहीं है, उन पर विदेशी मुद्रा का खर्च होना हम रोकते हैं । अब इसकी क्या कसौटी हो । मैं नहीं समझता कि हमको इस में कुछ ज्यादा पड़ना चाहिये । कोशिश यह करनी चाहिये कि आसानी से जो रोकी जा सकती हैं, उन को रोके ।

Shri Hem Barua: I have a very important question to ask.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मैं व्यवस्था यह चाहता हूं कि शास्त्री जी का जो प्रश्न था, वह बड़ा स्पष्ट था । अश्लील की व्याख्या क्या है वह इसमें नहीं जाना चाहते, लेकिन सरकार अपने मस्तिष्क से किस को अश्लील समझती है और किस साहित्य पर रोक लगाती है उन के सम्बन्ध में कम से कम सरकार अपना मत बताये ।

Mr. Speaker: I think, the Minister has already answered.

Shri Chintamani Panigrahi: May I know whether, under the various cultural agreements with different countries, India is also exporting books from this country and among the imports which we are having, which language publications top the list of those imports?

Shri Dinesh Singh: I think, the bulk of the import of books is in English.

Shri Chintamani Panigrahi: One part of my question has not been answered I wanted to know whether India is exporting books to different countries.

Shri Dinesh Singh Yes, we also send our books

Shri Piloo Mody: I have read these books on sex that come from abroad and I find them to be more educative than the text-books that the Government produces, particularly on Geography I would like to ask the Minister what steps he is taking to destroy those books

Mr Speaker · Mr Madhu Limaye

श्री मधु लिमये : यह सवाल किताबों की आयात के बारे में है और इन्होंने यह कहा है—

> "Import of obscene and undesirable books is banned and the Customs are required to implement it"

तो कम से कम कस्टम वाले इस की भी जानकारी जरूर रखते होंगे कि छपाई जाती हैं किताबें लेकिन किताबें नही आती, उनकी जगह रद्दी आती है। 1 जुलाई को मैंने उस का उल्लेख किया था। 7 दिन हो गये—क्या मंत्री महोदय ने इसकी जानकारी हासिल की है कि ऐसे कुछ व्यक्ति हैं जो किताबों का लाइसेंस लेते है, दस्तावेज आदि बैंको के द्वारा आते जाते हैं, लेकिन किताबें नही आती हैं, रद्दी आती है और जो विदेशी मुद्रा बच जाती है, उस मे बढ़िया और दूसरे सामान सस्ते मे मंगवाते हैं यानी रुपये का माल दो आने मूल्य मे।

श्री दिनेश सिंह : जी हाँ, अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जिक्र किया था और वह जांच के लिये मैंने कह दिया था।

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही है कि मुद्रा अवमूल्यन के बाद विदेशी पुस्तकों के दाम, जैसे विज्ञान की दवाइयों की और एकोनामिक्स की किताबों की कीमतें बहुत ज्यादा बढ़ गयी हैं और क्या सरकार ऐसा सोच रही है कि बाहर से ऐसी किताबों के चीप एडीशन्स मंगाये जायें ताकि इस देश के गरीब विद्यार्थी जो साइंस पढ़ते हैं, मैडिकल कालिजेज मे पढ़ते हैं या एकोनामिक्स पढ़ते हैं उनको उन किताबो को खरीदने मे सहूलियत हो सके ?

श्री दिनेश सिंह : जी हाँ, कमाने वाले भी इससे ज्यादा फायदा उठाना चाहते हैं कि जो उनको विदेशी मुद्रा का लाइसेंस मिलता है उससे वह उन पुस्तको के सस्ते एडीशन्स मंगवाये ताकि उन पुस्तको को वह ज्यादा बेच सकें।

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष महोदय, मैं पूछना चाहता हू कि सरकार इसके लिए क्या कार्यवाही करने की सोच रही है ताकि हमारे देश के गरीब विद्यार्थी भी उन चीजों को पा सकें ?

श्री दिनेश सिंह : उसके लिए तो अध्यक्ष महोदय, यहा छपाई का इंतजाम करना है जिसके बारे मे मैं समझता हू कि यहा एजुकेशन मिनिस्टरी ने कुछ उसके लिए क़दम उठाय है।

Shri Tenneti Viswanatham: Reverting to the obsence books, what is the opinion of the hon Minister about *Lady Chatterley's lover*? Has he banned it?

Shri Piloo Mody: Is he asking for his personal opinion or his official opinion?

Shri Tenneti Viswanatham: I am asking for the Government's opinion Has the book been banned and if it has been banned, why is it found in the book-shops here?

Shri Dinesh Singh: No.

Shri Surendranath Dwivedy: What is the meaning of 'No'? Has it been banned or not

श्री रणवीर सिंह: हमारे देश में कुछ ऐसी संस्थाएं, असोसियेशन्स और यूनियन्स हैं जिनका कि काफ़ी ऐंटी नेशनल और ऐंटी सोशल शोशण चलता है और वह देश को बड़ी हानि पहुंचाती हैं। रिश्वत के तौर पर उन के पास बहुत ज्यादा तादाद में बाहर के किताबें आती हैं और वैसे किये और यहां वह उनको बेचते हैं और इस तरह से देश के खिलाफ़ ऐंटी नेशनल एक्टिविटीज चलाना चाहते हैं तो क्या मिनिस्टर साहब के नोटिस में ऐसी यूनियन्स हैं जो यह काम करती हैं और क्या वह उनके इम्पोर्ट के लिए कोई बात सोचते हैं?

श्री दिनेश सिंह: अगर वह बगैर पैसे के आती हैं तो जाहिर है कि उसमें कोई विदेशी मुद्रा खर्च नहीं होती है। यहां तो यह विदेशी मुद्रा के हिसाब से देख रहे थे।

Shri Swell: The hon Minister has said that certain types of books should not be imported into the country. I would like to know whether he has some kind of machinery or he has developed any kind of process to sort out these books and decide which books should be brought into the country and which books should not be brought, and if he has that kind of machinery, whether this machinery has been given the authority to decide what books the people of this country should read and what they should not read?

Shri Dinesh Singh: So far as the books are concerned, they are decided by the Minister of Education and the Ministry of Home Affairs in the case of anti-national books. So far as the magazines are concerned which are banned, they have been decided by the Controller-General of Imports and Exports.

An hon. Member: There is no Controller-General of imports and exports but only a Chief Controller.

Shri D. C. Sharma: The universities and colleges in India have been complaining for the last two years that they cannot get reference books which they need and they cannot get journals which they need and they cannot get books of use to the students and professors because of the restrictive nature of the import policy of the Government of India, which is of a very wrong kind, and which, so to say, works against the best interests of this country.

Shri Dinesh Singh: I am glad the hon Member has pointed this out. I may mention to the House that we have increased the quota of import for books this year from what it used to be before. In 1965-66 it had come down to 50 per cent of what it was in 1963-64. Now, we have not only restored it but actually increased it to 150 per cent Apart from this, libraries and other institutions are freely allowed to import books on the basis of actual use, such as technical books for their requirements

Uneconomic Railway Lines

+

*997. **Shri S. C. Samanta**:
Shri Yashpal Singh:
Shri A. K. Kisku:
Shri S. N. Maiti:
Shri Tridib Kumar Chaudhuri:
Shri Vishwa Nath Pandey:
Shri Y. A. Prasad:
Shri Ram Kishan Gupta:
Shri R. K. Sinha:
Shri N. K. Sanghi:
Shri Parthasarathy:
Shri Hem Raj:

Will the Minister of Railways be pleased to state:

(a) whether it is proposed to scrap certain uneconomic railway lines;